जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैनदर्शन का मार्ग पूर्ण स्वाधीनता का मार्ग है।

- डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

वर्ष : 24 | मार्च (प्रथम) 2002 | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अंक: 21 | सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

गजपंथा (नासिक-महा.) : मुक्तिपंथ गजपंथ की पावन धरा पर भारत सरकार द्वारा घोषित **अहिंसा वर्ष** में भगवान महावीर के 2600वें जन्ममहोत्सव के अवसर पर गजपंथ सिद्धक्षेत्र, आनन्दीवन नन्दीश्वर आश्रम, मखमलाबाद-नासिक ट्रस्ट के अंतर्गत पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में सोमवार, दिनांक 11 फरवरी से रविवार, 17 फरवरी 2002 तक श्री 1008 महावीरस्वामी दिग. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन होते थे। इसके साथ ही अर्न्तराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पं. अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, बाल ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' भोपाल, पं. सुशीलजी इन्दौर एवं पं. अशोककुमारजी लुहाड़िया जयपुर के व्याख्यानों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा एवं सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित जिनकुमारजी नखाते, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित आलोककुमारजी कारंजा, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित यशवंतजी शास्त्री देवलाली, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा एवं पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़ ने सम्पन्न कराये।

11 फरवरी को प्रतिष्ठास्थल में श्री हर्षवर्द्धन जैन परिवार औरंगाबाद ने ध्वजारोहण किया । प्रतिष्ठामण्डप का उद्घाटन श्री कैलाशराव रणदिवे परिवार मुम्बई ने किया। महोत्सव में श्री महावीर पंचकल्याणक व याग मण्डल विधान एवं इन्द्रसभा-राजसभा ने सभी को आकर्षित किया।

13 फरवरी को घटयात्रा का विशाल जुलूस निकाला गया। 14 फरवरी को जन्मकल्याणक का विशाल जुलूस प्रतिष्ठा मण्डप से पाण्डुक शिला पर पहुँचा, जहाँ बाल तीर्थंकर का 1008 कलशों से जन्माभिषेक किया गया। रात्रि में मैनपुरी से आया विशाल काँच का पालना-झूला आकर्षण का केन्द्र रहा ।

15 फरवरी को तपकल्याणक के अवसर पर दीक्षावन में बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री का संसार की असारता को दर्शानेवाला वैराग्यगर्भित प्रवचन हुआ। 16 फरवरी को केवलज्ञानकल्याणक की इन्द्रों द्वारा पूजन की गई। इसी दिन समवशरण रचना एवं दिव्यध्वनि का प्रसारण भी हुआ। रात्रि में रंगारंग धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। 17 फरवरी को पावापुरी की रचना, पावापुरी से मुनिराज सन्मति को निर्वाणप्राप्ति, निर्वाणमहोत्सव एवं मोक्षकल्याणक पूजन की गई। इसके पश्चात् मनुहारी वेदी में जिनबिम्ब विराजमान, शिखर पर कलश एवं ध्वजारोहण किया गया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन श्री सन्तोषजी पाटनी वाशिम की अध्यक्षता में एवं श्री फूलचन्दजी मुक्किरवार के मुख्यातिथ्य में सानन्द सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित अभयजी शास्त्री, पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया, पण्डित नेमीचन्दजी अर्पल, श्री हर्षवर्धनजी जैन एवं श्री आदिनाथजी नखाते की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

आयोजन में विभिन्न स्थानों से 3 हजार साधर्मी भाई-बहिनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर 35 हजार रुपये का सत्साहित्य बिका तथा 26 हजार रुपये के भगवान महावीर से संबंधित किताबों के सैट नि:शुल्क वितरित किये गये एवं 11 हजार 436 रुपये के प्रवचनों के कैसिट्स एवं सी.डी.घर-घर पहुँचे।

सम्पूर्ण आयोजन बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री एवं पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया के कुशल निर्देशन में अभूतपूर्व उत्साह के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

युवा फैडरेशन समाचार

1. उदयपुर (सैक्टर- 11)- यहाँ समयसार कक्षा, बाल पुस्तकालय, कैसेट लाईब्रेरी, साप्ताहिक पाठशाला, कंठपाठ आदि सभी कार्यक्रम नियमित चल रहे हैं। 27 फरवरी की बैठक में 3 फरवरी को धार्मिक भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। आगामी विशेष कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर गोष्ठी रखने का विचार किया गया। धार्मिक भ्रमण के अन्तर्गत प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशी को भक्तिसंध्या का कार्यक्रम रखने का भी निर्णय लिया गया। **- किरण जैन**

2. डडूका (बाँसवाड़ा)- यहाँ फैडरेशन सदस्यों में से अधिकांश रोजाना पूजनपाठ व स्वाध्याय करते हैं। शेष सदस्य प्रत्येक रविवार को सामूहिक पूजन में भाग ले रहे हैं। स्थानीय शाखा के निर्णयानुसार प्रत्येक रविवार को मंदिरजी में सायंकालीन शास्त्रसभा में सभी सदस्य उपस्थित हो रहे हैं। **- सुशील जैन**

3. भिण्ड (देवनगर)- यहाँ आयोजित नियमित कार्यक्रमों के साथ 26 जनवरी को मंदिरजी में नवदेवता पूजन विधान का आयोजन किया गया। शाम को भक्तिसंध्या का एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

एकान्तवास साधक के लिए श्रेयस्कर है

कुटुम्बरूपी काजल की कोठरी में रहने से संसार बढ़ता है। चाहे जितना उसका सुधार करो तो भी एकान्तवास से जितना क्षय होनेवाला है उसका सौवाँ हिस्सा भी उस काजल की कोठरी में होनेवाला नहीं है। वह कषाय का निमित्त है, मोह के रहने का अनादिकालीन पर्वत है। सुधार करते हुए कदाचित् सम्यग्दर्शन होना सम्भव है। इसलिए वहाँ अल्पभाषी होना, अल्पपरिचयी होना, अल्पसत्कारी होना, अल्प सहचारी होना, अपने परिणाम का विचार करना, यही श्रेयस्कर है।

- श्रीमद् राजचन्द, प्रेषक - भबूतमल भण्डारी, बैंगलोर

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन 2

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

हरिववंशपुराण की विषयवस्तु में कथानक के साथ ऐसे बहुत से आध्यात्मिक प्रसंग सम्मिलित हैं, जिनमें आत्मकल्याणकारी एवं जनहित की भरपूर भावनायें निहित हैं। कथावस्तु के बीच-बीच में ऐसे अनेक तात्त्विक और नैतिक संदेश मिलते हैं, जिनसे पाठकों का जीवन ही बदल सकता है, मानवजीवन सफल एवं सार्थक हो सकता है।

यही कारण है कि प्रस्तुत जिनसेनाचार्य विरचित हरिवंश पुराण के अतिरिक्त संस्कृत भाषा में ही सर्वश्री धर्मकीर्ति, श्रुतकीर्ति, सकलकीर्ति, जयसागर, जिनदास एवं मंगराग द्वारा भी इसी नाम से रचनायें लिखीं गईं है। इन सबमें प्रस्तुत रचना सभी दृष्टिकोणों से सर्वश्रेष्ठ है। इनके सिवाय इसी विषयवस्तु के आधार पर नेमीनाथचरित्र और पाण्डवपुराण नामों से भी लगभग 20 रचनायें लिखीं गईं हैं। प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा में भी 9-10 ग्रन्थ इसी विषयवस्तु को लेकर रचे गये हैं।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जिनमत के कथन करने की पद्धति (शैली) को अनुयोग कहते हैं। सम्पूर्ण जिनवाणी चार अनुयोगों में विभक्त है। प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग। इनमें यह हरिवंश पुराण प्रथमानुयोग का ग्रन्थ है। जिनमत का उपदेश इन्हीं चार अनुयोगों के द्वारा दिया गया है।

प्रथमानुयोग उसे कहते हैं –

जिसमें अव्युत्पन्न अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवों को तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि 63 शलाका पुरुषों के चरित्रों के माध्यम से अध्यात्म और आचरण की शिक्षा दी जाती है। प्रथमानुयोग में कथानक के साथ संसार की विचित्रता, पुण्य-पाप का फल एवं महन्त पुरुषों की प्रेरणाप्रद प्रवृत्तियों के निरुपण से जीवों को धर्म में लगाया जाता है। जो जीव अल्पबुद्धि होते हैं, वे भी इन सबसे प्रेरणा पाकर धर्मसन्मुख होते हैं; क्योंकि अल्पबुद्धि सूक्ष्म निरूपण को तो समझ नहीं सकते, लौकिक कथाओं को ही जल्दी समझ सकते हैं, उनकी रुचि का विषय होने से उपयोग भी इसमें लग जाता है। लौकिक कथा-कहानियों में तो केवल विकथा होने से पाप का ही पोषण होता है और शलाका पुरुषों के चरित्र चित्रण में जहाँ-तहाँ प्रसंग पाकर पाप को छुड़ाकर धर्म में लगाने का ही प्रयोजन ही प्रगट करते हैं।

अल्पबुद्धि जीव कथाओं के रसिक होने से उन्हें पढ़ते-सुनते हैं और पाप को बुरा जानकर एवं धर्म को भला जानकर धर्म में रुचिवंत हो जाते हैं।

इसीप्रकार अन्य सभी पुराणों में भी न केवल कथानक मात्र है; बल्कि प्रसंगानुसार धर्म व नीति के अतिरिक्त नाना कलाओं का परिचय भी है। इस ग्रन्थ में त्रैलोक्य का स्वरूप, महावीरस्वामी का संक्षिप्त जीवनचरित्र, समवसरण एवं धर्मोपदेश, संगीत कला आदि का वर्णन है, जिसकी प्रसंगानुसार विस्तृत जानकारी इसी कृति में यथास्थान दी जायेगी।

प्रस्तुत हरिवंश पुराण के कर्त्ता महाकवि आचार्य जिनसेन पुन्नार संघ के थे, पुन्नार कर्नाटक का ही प्राचीन नाम है। इनके गुरु का नाम कीर्तिषेण था और उन्होंने अपनी यह रचना शक् संवत् 705 में पूर्ण की थी। यह हरिवंशपुराण विषय-विवेचन की अपेक्षा तो दिगम्बर सम्प्रदाय के कथा साहित्य में अपना प्रमुख स्थान रखता ही है, प्राचीनता की अपेक्षा भी संस्कृत कथा ग्रन्थों में तीसरा स्थान रखता है। पहला रविषेणाचार्य का पद्मपुराण, दूसरा जटासिंहनन्दी का वरांग चरित्र और तीसरा यह हरिवंशपुराण है।

ज्ञातव्य है कि प्रस्तुत हरिवंशपुराण के रचयिता आचार्य जिनसेन से महापुराण के कर्त्ता जिनसेनाचार्य भिन्न हैं। जिनसेनाचार्य (प्रथम) द्वारा रचित महापुराण उनकी अन्तिम कृति है, जिसे वे स्वयं पूर्ण नहीं कर पाये। उनके स्वर्गवास के बाद उन्हीं के शिष्य आचार्य गुणभद्र ने महापुराण को पूर्ण किया।

हरिवंशपुराण के कर्त्ता आचार्य जिनसेन बहुश्रुत विद्वान थे। हरिवंशपुराण में हरिवंश की कथा के साथ-साथ जैनवाङ्मय के विविध विषयों का अच्छा निरूपण हुआ है। इसकारण यह जैन साहित्य का अनुपम ग्रन्थ बन गया है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल शक् संवत् 705 है, जो विक्रम संवत् 840 होता है।

कृतज्ञताज्ञापन हेतु प्रस्तुत ग्रन्थकर्ता आचार्य जिनसेन ने अपने पूर्ववर्ती आचार्य समन्तभद्र, सिद्धसेन, देवनन्दी, वज्रसूरि, महासेन, रविषेण, जटासिंहनन्दी, कुमारसेन गुरु, वीरसेन गुरु, जिनसेन आदि का स्मरण करते हुए उनकी प्रशंसा की है।

हरिवंशपुराण की कथावस्तु : इस पुराण में पुराणकार मुख्यत: तो तीर्थंकर नेमीनाथ भगवान का चरित्र लिखना चाहते थे; परन्तु प्रसंगोपात्त अन्य कथानक भी आ गये। तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ का जीवन आदर्श त्याग का जीवन है। वे हरिवंश गगन के प्रकाशमान सूर्य हैं। भगवान नेमीनाथ के साथ नारायण श्रीकृष्ण एवं बलभद्र राम के आदर्श चरित्र भी इसमें आ गये। पाण्डवों तथा कौरवों की लोकप्रिय कथायें भी इसमें चित्रित हो गई हैं। इसमें श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का चरित्र भी अपना पृथक् स्थान रखता है।

साहित्यिक सुषमा : प्रस्तुत हरिवंशपुराण न केवल कथाग्रन्थ है; किन्तु यह महाकाव्य के गुणों से युक्त उच्चकोटि का महाकाव्य भी है। इसके सैंतीसवें सर्ग से भगवान नेमीनाथस्वामी का चरित्र प्रारंभ होता है। वहीं से इसकी साहित्यिक सुषमा वृद्धिंगत होती है। अनेक सर्ग सुन्दर-सुन्दर छन्दों से सुशोभित हैं। ऋतुवर्णन, चन्द्रोदय वर्णन आदि भी अपने ढंग के निराले हैं। नेमीनाथ भगवान के वैराग्य तथा बलदेव के विलाप आदि के वर्णन करने के लिए कवि ने जो छन्द चुने हैं, वे रसपरिपाक के एकदम अनुरूप हैं। श्रीकृष्ण की मृत्यु के बाद बलदेव का करुणविलाप और स्नेहचित्रण इतना प्रभावी है कि पाठक अश्रुधारा को नहीं रोक पाता।

नेमीनाथ के वैराग्य वर्णन को पढ़कर प्रत्येक मनुष्य का हृदय संसार की माया-ममता से विमुख हो जाता है। राजुल के परित्याग पर पाठक के नेत्रों से सहानुभूति की अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है तथा उनके आदर्श सतीत्व एवं वैराग्य को देखकर जन-जन के मन में उनके प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न होने लगती है।

मृत्यु के समय श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से जो अन्तिम उद्गार निकलते हैं, उनसे उनकी महिमा बहुत ही ऊँची उठ जाती है, जिसे तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध हुआ हो, उसके परिणामों में जो समता होनी चाहिये वह श्रीकृष्ण के भावों में अन्ततक स्थित रही है।

इसप्रकार महाकाव्य की साहित्यिक सुषमा प्रस्तुत ग्रन्थ में यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखरी हुई है। **(क्रमश:)**

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(95 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

मैं शरीर से भिन्न हूँ। पुण्य और पाप की शुभ-अशुभ लगार भी कृत्रिम है और नई-नई होती है तथा मैं तो उसका जानने-देखनेवाला त्रिकाल ज्ञानस्वरूपी आत्मा हूँ ह्न इसप्रकार आत्मा की महिमा में एकाग्र होने पर परवस्तु के विचार छूट जाना सच्चा ध्यान है और आत्मा की महिमा भूलकर पर के विचार में एकाग्र होना झूठा ध्यान है। आत्मा को जानकर उसमें एकाग्र होने से शान्ति प्रगट होती है। सत्समागम में आत्मा की पहिचान और ध्यान करने का सतत् प्रयत्न करे तो इस काल में भी आत्मा का ध्यान होता है - ऐसा ध्यान अभेदभक्ति है और उस अभेदभक्ति से ही मुक्ति होती है।

श्री भरत महाराज के मुख से अभेदभक्ति की ऐसी सुन्दर चर्चा सुनकर वे रानियां बहुत प्रसन्न हुईं और अन्तर में उल्लासपूर्वक उस अभेदभक्ति का प्रयत्न करने लगी।

भाई ! यह बात आत्मस्वभाव की है। वह अन्यत्र जहाँ कहीं से मिले - ऐसा नहीं है और जिसे आत्मकल्याण की जरूरत है, भवभ्रमण का डर है - ऐसे आत्मार्थी के अलावा अन्य जीव को यह बात ठीक लगे - ऐसा नहीं है। आत्मस्वभाव की यह बात आत्मार्थी जीव के लिये ही है। ऐसे मनुष्य भव में आया और परमदुर्लभ ऐसी सत्यवाणी सुनने का योग मिला तो अब भी स्वभाव की रुचि से यह बात नहीं सुने और नहीं समझे तो कब समझेगा। अनन्त काल में भी यह बात सुनना बहुत मुश्किल है। अत: आत्मा की दरकार करके यह बात समझने जैसी है।

जीव अज्ञानभाव से स्वर्ग में भी अनन्तबार गया और नरक में भी अनन्त बार गया। पुण्य-पाप और आत्मा के साथ में अभेदभाव की मान्यता से चारों गतियों में अनन्त काल से रखड़ा; परन्तु जब यह ज्ञानज्योति झकाझक करती जागी और चारों गति के कारण को मूल में से उखाड़ती हुई प्रगट हुई तब परिभ्रमण टल गया और आंशिकरूप से मुक्ति की पर्याय प्रकट हुई। सच्ची समझ ने ही अज्ञानरूपी अंधकार का नाश किया है। मेरा आत्मा ज्ञाता-दृष्टा, वीतरागी स्वभाववाला है - इसप्रकार ज्ञान में स्वीकारती हुई ज्ञानज्योति अच्छी तरह चमक गई है।

जिसप्रकार तलवार को चमकाते हैं, उसीप्रकार ज्ञानज्योति अच्छी तरह चमक गई है अर्थात् तैयार हो गई है, ऐसी तैयार हो गई है कि वह प्रकट होकर केवलज्ञान लेकर ही छूटेगी और केवलज्ञान लेने के बीच में कोई विघ्न आनेवाला है ही नहीं। जो ज्ञानज्योति प्रकट हुई है वह हमेशा प्रकट रहेगी और अखण्ड धारा से केवलज्ञान तक पहुँचकर ही जायेगी। ज्ञानज्योति ऐसी चमक गई है कि ज्ञान-आनन्द करती केवलज्ञान समुद्र में मिल जाने के उसके फैलाव को कोई रोक नहीं सकता है। जो चैतन्य ज्ञानज्योति जाग्रत हुई है, उसे रोकने की, जाग्रत करने की सामर्थ्य इस जगत में किसी पदार्थ में नहीं है। किसी पदार्थ का ऐसा गुण अथवा ऐसी कोई पर्याय नहीं है। जागते हुये को ढकने की तीन काल तीन लोक में किसी की शक्ति नहीं है; अत: आचार्यदेव कहते हैं कि अरे आत्मा ! तू जाग, तू जागकर देख तो ! तेरे स्वभाव में बंधन है ही नहीं ह्न ऐसा भान होने पर द्रव्यबंध भी टूट ही जायेगा, रहेगा नहीं। जब ज्ञान प्रगट होता है, तब रागादिक नहीं रहते और उनका कार्य जो बन्ध वह भी नहीं रहता है। इसके बाद ज्ञान को ढंकनेवाला कोई भी नहीं रहता है - वह ज्ञान सदा प्रकाशमान ही रहता है।

अब कहते हैं कि जो आत्मज्ञ है, वही शास्त्रज्ञ है ह्न

य: आत्मानं जानाति अशुचिशरीरात् तत्त्वत: भिन्नं ।
ज्ञायकरूपस्वरूपं स: शास्त्रं जानाति सर्वं ।।

अर्थ- जो मुनि अर्थात् जो जीव अपने आत्मा को इस अपवित्र शरीर से तत्त्वत: भिन्न, ज्ञायकस्वरूप जानता है, वह सर्व शास्त्रों को जानता है।

जो जीव शास्त्राभ्यास तो अल्प ही करता है; परन्तु अपने आत्मा का रूप ज्ञायक देखन-जाननहार, इस अशुचि शरीर से भिन्न है - इसप्रकार शुद्धोपयोगरूप होकर जानता है तो वह सभी शास्त्रों को जानता है। यदि अपना स्वरूप न जाना और बहुत शास्त्र पढ़े तो उससे क्या साध्य है ?

य: न अपि जानाति आत्मानं ज्ञानस्वरूपं शरीरत: भिन्नं ।
स: न जानाति शास्त्रं आगमपाठं कुर्वन् अपि ।।

जो मुनि अर्थात् जीव अपने आत्मा को ज्ञानस्वरूप और शरीर से भिन्न नहीं जानता, वह आगम का पाठ करता होने पर भी शास्त्र को नहीं जानता है।

जो मुनि अर्थात् जो जीव शरीर से भिन्न ज्ञानस्वरूप आत्मा को नहीं जानता, वह बहुत शास्त्र पढ़ता हो तो भी बिना पढ़ा ही है। शास्त्र पढ़ने का सार तो अपने स्वरूप को जानकर राग-द्वेष रहित होना था। जो शास्त्र पढ़कर भी ऐसा नहीं हुआ तो उसने क्या पढ़ा ? अपना स्वरूप जानकर उसमें स्थिर होना यह निश्चय स्वाध्याय तप है और वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय, धर्मोपदेश ह्न ऐसे पाँच प्रकार व्यवहार स्वाध्याय के हैं। यदि वह व्यवहार निश्चय के लिये है तो वह व्यवहार भी सत्यार्थ है और निश्चय बिना तो व्यवहार व्यर्थ है।

श्री आचार्य भगवान कहते हैं कि इस समयसार द्वारा मैं अपने आत्मा के स्ववैभव से एकत्व-विभक्त शुद्धात्मा के स्वरूप को दर्शाता हूँ। उसका श्रवण करनेवाले हे श्रोताओं ! श्रवण करते हुये तुम भी एकत्व-विभक्त शुद्धात्मा के अलावा दूसरी बात अपने में इस बीच में नहीं लाना और मुझमें भी अन्य बात नहीं देखना। एकत्व-विभक्त शुद्धात्मा ही कहना चाहता हूँ तो उसे सुनते हुए भी उसका ही लक्ष्य रखना।

आत्मा के एकत्व-विभक्त स्वरूप का कथन करते हुये बीच में कुछ विभक्ति इत्यादि का दोष आ जाये तो उस दोष को देखने में नहीं अटकना। और यदि तुम्हें व्याकरण आदि नहीं आये तो अपने में भी उस दोष को नहीं देखना; क्योंकि मेरे लक्ष्य का जोर भाषा पर नहीं है; परन्तु शुद्धात्मा पर ही है। उसमें तो मेरी भूल है ही नहीं; अत: तुम्हें भी अपने जैसा शुद्धात्मा दिखाना चाहता हूँ। ऐसे शुद्धात्मा को ही लक्ष्य में रखकर उपादान-निमित्त के भाव की संधि करना अर्थात् मैं मेरे स्वानुभव से जैसा शुद्धात्मा कहना चाहता हूँ वैसा शुद्धात्मा तुम भी समझ लेना। **(क्रमश:)**

आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकें ह्न इस उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से जैनसिद्धान्त महाविद्यालय चल रहे हैं, जिनमें 172 छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 264 छात्र परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 41 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राजस्थान विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (तीन वर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है जो हायरसेकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स है, जो एम.ए. के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्ड्री परीक्षा (कक्षा दसवीं) सामान्य अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित नेमिचन्दजी पाटनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित अनुभवप्रकाशजी जैनदर्शनाचार्य एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र जुलाई 2002 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है, अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें। यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें देवलाली (नासिक) महाराष्ट्र में 10 मई से 27 मई तक होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें आदि से अन्त तक (18 दिन) रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

देवलाली का पता –
पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट,
कहान नगर, लाम रोड, देवलाली,
जिला – नासिक 422401 (महा.)
फोन – (0253) 542274, 542278

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय,
श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन – (0141) 515581, 515458

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी जन्मजयन्ती एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित 36 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, देवलाली (नासिक-महा.) में

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की जन्मजयन्ती एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 36वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 10 मई से 27 मई 2002 तक होना निश्चित हुआ है।

ध्यान रहे, स्वामीजी की जयन्ती का कार्यक्रम आरंभिक 5 दिन 10 मई से 14 मई तक सम्पन्न होगा।

इस शिविर में मुख्यरूप से धार्मिक अध्ययन करानेवाले बन्धुओं (अध्यापकों) एवं मुमुक्षु भाईयों को शिक्षण-विधि में प्रशिक्षित किया जायेगा।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं ब्र. यशपालजी जैन आदि के प्रवचनों और कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। इनके अतिरिक्त शिक्षण-प्रशिक्षण में सहयोग देनेवाले अनेक प्रशिक्षित अध्यापक भी पधारेंगे। बालकों, प्रौढ़ों और महिलाओं के लिये शिक्षण-कक्षाओं की भी व्यवस्था रहेगी।

बालबोध-प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिये बालबोध पाठमाला भाग - 1, 2, 3 की तथा प्रवेशिका-प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिये वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग - 1, 2, 3 की प्रवेश प्रतियोगितात्मक लिखित परीक्षा दिनांक 9 मई को दोपहर 2 बजे देवलाली में ली जावेगी, जिसमें प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। अत: प्रवेशार्थी उक्त पुस्तकों की पूरी तैयारी करके आवें।

ध्यान रहे, प्रवेशिका प्रशिक्षण में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा, जो बालबोध प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

आपके यहाँ से कितने व कौन-कौन भाई-बहिन शिविर में पधार रहे हैं, इसकी सूचना निम्नांकित पतों पर अवश्य भेज देवें ; ताकि उनके ठहरने एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र-व्यवहार का पता
श्री सीमन्धर जिनालय
173-175, मुम्बादेवी रोड, मुम्बई - 400 002
फोन - (022) 3425241

देवलाली पहुँचने का पता
पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट,
कहान नगर, लाम रोड, देवलाली,
जिला – नासिक (महा.)
फोन – (0253) 542274

जयपुर का पता
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)
फोन – (0141) 515581

प्लास्टिक : जीवमात्र की मंडराती मौत का पर्याय

ज्ञातव्य है कि यदि नाखून काटकर बाहर खुले में फैंका जाय और उसे कोई पक्षी दाना समझकर चुग ले तो मर जाता है। आज उससे भी अधिक गुना भयंकर, खतरनाक प्लास्टिक का उपयोग इतनी विपुल मात्रा में होने लगा है कि इससे जल, जंगल, जमीन, जानवर और जन (आदमी) - इन पाँचों के ऊपर मौत के घने बादल छाये हुए हैं।

सब्जी में प्लास्टिक की थैलियों से लेकर पिन, कंघी, पानी पीने की बोतलें, पर्दे, टूथब्रश, रेजर, पढ़ने-लिखने की सामग्री, ऑफिस स्टेशनरी, घर का फर्नीचर आदि में प्लास्टिक का उपयोग इतना बढ़ गया है कि समुद्र के किनारे, पहाड़ियों पर आये पर्यटनस्थलों पर, तीर्थस्थानों पर प्लास्टिक के पहाड़ दिखाई देते हैं। आज गोवा और हिमाचल प्रदेश ने इन पर कुछ अंश तक नियन्त्रण लाने का प्रयास किया है; परन्तु आवश्यकता केन्द्र द्वारा समग्र भारत में प्रतिबंध के प्रयास की है।

ये प्लास्टिक की थैलियाँ पशु के खाने में आने से रोजाना अनेक पशु मर जाते हैं। उनके शरीर में से 20 से 25 किलो प्लास्टिक की थैलियों का पिण्ड आँतों में से निकलता है। विकास की आड़ में समग्र सृष्टि का विनाश करनेवाली पाश्चात्य संस्कृति के इस पेट्रोकेमीकल प्रोडक्ट रूपी राक्षस ने अपना विशाल पंजा इस सुन्दर सृष्टि के ऊपर बड़ी बरबरता से फैला दिया है। बच्चे प्लास्टिक पहनकर या उससे खेलकर श्वास रुंधने से मरे हैं। साथ ही समुद्र में जो प्लास्टिक फैल जाता है वहाँ मछलियों आदि द्वारा निगलने से वे भी श्वास रुंधने से तड़प-तड़पकर मर जाती हैं। साथ ही इस दुष्ट प्लास्टिक को धरती माता भी नहीं पचा सकती। कागज या सूती कपड़े जमीन में विलीन हो जाते हैं; पर प्लास्टिक 500 साल तक भी नहीं गलता। जिस जमीन में प्लास्टिक हो वहाँ अनाज भी नहीं उगता, साथ ही यह भूगर्भ जल को भी तहस-नहस कर देता है।

प्लास्टिक की थैली में रखीं दूध, सब्जी, पान-मसाला, आईस्क्रीम, पिपरमेन्ट, चॉकलेट, वेफर, पापड़ इत्यादि प्रत्येक वस्तु में पी.वी.सी. (पोली-विन-क्लोराइड) नामक रासायनिक पदार्थ इन चीजों में मिलने से केन्सर होने की पूर्ण सम्भावनाएँ हैं। प्लास्टिक को यदि जलाने जायें तो उसमें से 57 जहरीली गैंसे निकलती हैं जिनके क्रूरपरिणामस्वरूप हार्ट-अटेक, कैन्सर, किडनी फैल से लेकर शरीर में कमजोरी, शरीर में तनाव, बहरापन, लीवर की बीमारी आदि सरलता से घर कर लेती है। इटली में 200 से अधिक स्थानीय फर्मों ने प्लास्टिक की थैलियों पर सम्पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है।

यह सब जानने के पश्चात् क्या एक समझदार देशप्रेमी भारतवर्ष को तहस-नहस करनेवाले प्लास्टिक का उपयोग कर सकता है ? नहीं, तो फिर आईये आज ही संकल्प करें और प्लास्टिक को तिलांजली दे दें तथा (1) सब्जी लेने कपड़े की थैली लेकर ही जायें (2) कपड़े की दुकान से लेकर जवाहरात की दुकानवाले आकर्षक कपड़े की या जूट की थैलियाँ ग्राहकों को दें। (3) प्लास्टिक की थैली में आनेवाले खाद्य पदार्थ को अपने स्वास्थ्य की खातिर छोड़ दें। (4) एक प्रजातंत्रीय आंदोलन किया जाये जिसके तहत सरकार को प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने को कहें।

यह मुश्किल नहीं है। आज से 25 साल पहले भी प्लास्टिक नहीं था; फिर भी हम अच्छी तरह जी रहे थे; अत: यह बहुत आसान है। **- हितेश महेता**

पर्यटन (तीर्थदर्शन)

उत्तरप्रदेश प्रान्त

श्रावस्ती (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : बलरामपुर बहराइच सड़कमार्ग पर बहराइच से 17 कि.मी. दूर है। बलरामपुर से बस सुविधा है।

प्राचीन कौशल प्रान्त के उत्तरी भाग की राजधानी श्रावस्ती वर्तमान में सहेठ-महेठ नाम से जाना जाता है। पौराणिक व ऐतिहासिक काल में 6 महानगरियों में मानी जानेवाली श्रावस्ती तीसरे तीर्थंकर संभवनाथ की गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकों की स्थली है। इनका प्रथम समवसरण भी यहीं आयोजित किया गया था। सम्राट जिनशत्रु के पुत्र मकरध्वज एवं नगरसेठ नागदत्त ने इसी स्थान पर तपश्चरण करके मुक्ति प्राप्त की थी।

सम्राट अशोक के पौत्र महाराज सम्प्रति ने यहाँ अनेक मंदिरों व स्तूपों का निर्माण कराया था। भगवान संभवनाथ का यहाँ विशाल जिनमंदिर था; किन्तु मुस्लिम बादशाह अलाउद्दीन ने यहाँ के समस्त मंदिरों, स्तूपों आदि को नष्ट कर दिया। पुरातत्त्व विभाग द्वारा किये गये उत्खनन में यहाँ अनेक जैन मंदिरों के भग्नावशेष, मूर्तियाँ, ताम्रपत्र आदि प्राप्त हुये हैं।

वर्तमान में यहाँ के प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर, जो वास्तव में सम्भवनाथ मंदिर ही है, में 1000 वर्ष प्राचीन भगवान ऋषभदेव की मूर्ति व अन्य जैनमूर्तियाँ हैं। इसके पास 18 जिनालयों के भग्नावशेष पड़े हैं।

यहाँ के शिखरबन्द जिनालय में तीर्थंकर संभवनाथ की 4 फुट ऊँची मनोहर व भव्य प्रतिमा के अलावा अन्य प्रतिमायें हैं। इसमें भगवान के चरण भी हैं।

रतनपुरी (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : फैजाबाद से बाराबंकी मुख्य सड़क मार्ग पर 27 कि.मी. से दांई ओर 2 कि.मी. दूर रोनाही ग्राम में स्थित है।

जैनधर्म के 15 वें तीर्थंकर भगवान धर्मनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा और ज्ञानकल्याणकों की भूमि रतनपुरी आज का रोनाही ग्राम है। यहाँ से उन्होंने धर्मचक्र का प्रवर्तन किया। यहाँ नदी के तट पर जिनमंदिर में भगवान धर्मनाथ की मूलनायक प्रतिमा विराजमान है।

काकन्दी (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : देवरिया से सलेमपुर मार्ग पर 14 कि.मी. दूर सड़क से 2 कि.मी. अन्दर खुखुद नामक ग्राम है ।

वर्तमान खुखुद ग्राम ही प्राचीन काकन्दीपुर है, जहाँ भगवान पुष्पदंत के गर्भ, जन्म व दीक्षा कल्याणक हुये। यहाँ ग्राम के बाहर एक दिगम्बर जिनालय है, यहाँ भगवान पुष्पदंत की संवत् 1548 की प्रतिष्ठित श्वेत पाषाण की प्रतिमा के अलावा भगवान नेमिनाथ की भव्य प्रतिमा एवं चौबीसी है। यहाँ से अभयघोष मुनि सहित अनेक मुनियों को निर्वाण प्राप्त हुआ था। मान्यता है कि भगवान महावीर का समवसरण भी यहाँ कई बार आया था।

यहाँ 30 टीले हैं, जिन्हें देवरा कहते हैं। इनकी खुदाई से अनेक जैन मूर्तियाँ, चैत्य एवं स्तूपों के खंडित अवशेष प्राप्त हुये थे।

(क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

पाठकों के पत्र

1. सिकलीपुरा(मलकापुर-महा.) निवासी श्री प्रेमचन्दजी मानके एम.ए. लिखते हैं कि -'' ब्र. यशपालजी द्वारा अनुवादित और सम्पादित क्षत्रचूड़ामणि ग्रंथ पढ़ा। संस्कृत पद्यों का सरल अर्थ तथा विशेष अर्थ देकर आपने ग्रंथ की महिमा बढ़ा दी है। उपयुक्त शब्दचयन से भाषा का सौंदर्य द्विगुणित हुआ है। यह ग्रंथ जीवन में अच्छा मोड़ लाने को समर्थ है। क्षत्रचूड़ामणि ग्रंथ आपके सम्पादित ग्रंथों में मास्टर पीस कहें तो अतिशयोक्ति नहीं है।''

2. नैणसी के सम्पादक डॉ. अम्बू शर्मा लिखते हैं कि - ''धीरे-धीरे मेरी 62 वर्षीय भार्या श्रीमती सत्यदेवी महावीरस्वामी के प्रति आकर्षित होने लगी है; क्योंकि आपका यह जैनपथप्रदर्शक नियमित आ रहा है तथा वह इसे बड़े चाव से पढ़ती है। गत बार इसमें आपने बड़ा पोस्टर भी छापा, 3 दिगम्बर मूर्तियों सहित मंदिरजी की भव्य आकृतियाँ थीं। उसे उसने अपनी निजी ठाकुरवाड़ी में लगा लिया है एवं आगन्तुक महिलाओं को इनका तथा जैनपथप्रदर्शक का महत्त्व एवं महावीरस्वामी के प्रति आकर्षण का कारण अपने टूटे-फूटे नवअर्जित ज्ञान से समझा रही है कि मैं युवा होती तो जैन ही हो जाती। कृपया जिनभावों में हमें निमग्न रखनेवाला यह आपका श्रेष्ठ सम्पादित पथप्रदर्शक नियमित भेजते रहें।''

परीक्षा सामग्री शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की शीतकालीन परीक्षायें दिनांक 26, 27 व 28 जनवरी 2002 को सम्पन्न हो चुकी हैं। जिन परीक्षा केन्द्रों ने अभीतक भी परीक्षा सामग्री नहीं भेजी है, वे तत्काल परीक्षा बोर्ड कार्यालय जयपुर को भिजवा दें, ताकि अंक तालिका व प्रमाण-पत्र आपको समय पर प्राप्त हो सकें। **- प्रबन्धक,** परीक्षा बोर्ड, जयपुर

वैराग्य समाचार

1. नांदेड निवासी श्री जयकुमारजी बाकलीवाल की माताजी का 10 फरवरी 2002 को निधन हो गया है। आप स्वाध्यायप्रेमी एवं तत्त्वपिपासु धार्मिक महिला थीं। आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 100 रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

2. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के वर्तमान छात्र श्री पंकज जैन के बड़े पिताजी खड़ैरी (दमोह) निवासी श्री शिवप्रसादजी सिंघई का 25 जनवरी 2002 को स्वर्गवास हो गया है। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति को 101रूपये प्राप्त हुये, एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही कामना है।

आगामी कार्यक्रम....

अवश्य ध्यान देवें

सभी साधर्मी बन्धुओं को सूचित किया जा रहा है कि अमेरिका के न्यूजर्सी शहर में 4 जुलाई से 7 जुलाई 2002 तक **जाना** (JAANA) का शिविर आयोजित किया जायेगा। जिनके परिजन वहाँ रहते हों, उन्हें अवश्य सूचित कर दें।

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण
फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम	:	जैनपथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर
प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
मुद्रक	:	श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., एम.आई.रोड, जयपुर
प्रकाशक का नाम	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक :

दिनांक : 1-3-2002 **ब्र. यशपाल जैन**

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

जयपुर	- 23 मार्च से 24 मार्च 2002	सेमिनार (विश्वविद्यालय)
दिल्ली	- 25 मार्च से 28 मार्च 2002	विधान - आत्मार्थी ट्रस्ट
कलकत्ता	- 30 मार्च से 6 अप्रैल 2002	सिद्धचक्र विधान
खतौली	- 20 से 22 अप्रैल 2002	महावीरजयन्ती
दिल्ली (सरोजनी नगर)	- 23 से 24 अप्रैल 2002	पंचकल्याणक

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **मार्च (प्रथम) 2002**

आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर